शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

भारत को जोड़नेवाली देवनागरी लिपि

विनोबा

जिन कारणों से सबकी बोली के तौर पर हिंदी को मान्यता डी गयी है, उन्ही कारणों से नागरी को सबकी लिपि के तौर पर मान्यता मिलनी चाहिए। हिन्दुस्तान की सब भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाएँ ऐसा कहने में दूसरी भाषाओं के लिए आज जो लिपियाँ चल रही हैं, उनका निषेध नहीं । वे लिपियाँ भी चलेंगी और नागरी भी चलेगी । इस वास्ते मैं नगरी लिपि के बारे में तीव्रता से सोचता हूँ।

वास्तव में तो विनोबा सब लिपियों का विरोधी है, लिपि मात्र का विरोधी। क्योंकि मैं अगर पढना-लिखना नहीं सीखा होता, लिपि न जानता होता, तो आत्मसाक्षात्कार में प्रगति जल्दी होती । दुनिया में दो बड़े ज्ञानी हो गए जो लिपियों से मुक्त थे। एक थे कबीर, दूसरे मुहम्मद पैगम्बर। दोनों निरक्षर थे और दोनों का असर बहुत पड़ा है। कबीर का असर कुल भारत पर पड़ा और मुहम्मद पैगम्बर का तो दुनिया पर पड़ा । इस वास्ते लिपिमात्र का विरोध करने वाले विनोबा का यह दुर्दैव है कि वह साक्षर है और एक नहीं, कम से सैम 12- 15 लिपियाँ जानता है । वे लिपियाँ सीखने में वह अपनी आँखें बिगाड़ चुका है । इस वास्ते दयाभाव से सोचता है कि दूसरों की आँखें न बिगड़ें। इसी लिए सोचता है कि एक लिपि, कम से कम भारतभर में हो जाए, तो बहुत अच्छा होगा। पहले भारत में एक ही लिपि चलती थी - ब्राह्मी लिपि। बाद में नागरी लिपि आयी । उसके बाद जब अलग-अलग भाषाएँ बनीं, तो अलग-अलग लिपियाँ आयीं । आज भिन्न-भिन्न प्रदेश के लोग, लिपि भेद के कारण अलग हुए हैं। दक्षिण की चार भाषाओं की चार लिपियाँ हैं । उनकी भाषाओं में बहुत-से शब्द सामान हैं और संस्कृत के शब्द तो समान हैं ही, लेकिन लिपियाँ चार हैं। इसलिए एक-दूसरे की भाषाएँ सीखना कठिन जाता है।

जैसे हिंदी एक स्नेह तंतु है, जो सारे भारत को बांध सकता है, वैसा ही और उतने ही महत्व का दूसरा स्नेह तंतु है, नागरी लिपि । आज भिन्न-भिन्न भाषाओं को लोग अपनी-अपनी लिपि में लिखते हैं, साथ ही नागरी में भी लिखें तो कितना लाभ होगा! उनकी लिपि अच्छी है, सुन्दर है, उसका निषेध नहीं । परन्तु उसके साथ ऐच्छिक तौर पर नागरी में भी अपनी भाषा लिखें तो भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं को सीखना सुलभ हो जाएगा। हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की कुल भाषाएं नागरी में भी लिखी जाएँ। उससे बहुत लाभ होगा । उससे एक-दूसरे के भाषा सीखने में बहुत मदद होगी। आज भी कई भाषाएं नागरी में लिखी जाती हैं । संस्कृत, पाली, अर्ध मागधी का बहुत-सा साहित्य नागरी में है। उसके अलावा हिंदी और मराठी जैसी दो महान भाषाएँ नागरी में लिखी जाती हैं । नेपाली भी नगरी में लिखी जाती है। गुजराती लिपि भी नागरी का ही एक प्रकार है। नागरी की ऊपर की शिरोरेखा हटते ही वह गुजराती बन जाती है । सिर्फ दो-चार अक्षरों का फर्क है। उसे वे लोग बदल देंगे, तो वह लिपि भी नागरी बन जायेगी। दूसरी लिपियाँ भी हैं बंगाली वगैरह, वे भी नागरी के बहुत नजदीक हैं।

हिन्दुस्तान की सब भाषाएँ नागरी में लिखी जाएँ तो एकता के लिए बहुत उपयोग होगा।

-विनोबा साहित्य खंड 20